आत्मार्थी छात्रों को अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें - इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें पूरे देश के विभिन्न भागों से आये छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 520 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 57 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को राज. संस्कृत वि.वि.की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस., एम. बी. ए. जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को योग्यतानुसार दो वर्ष का राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर (राज.) का उपाध्याय परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी है, जो (एम.ए.) के समकक्ष है।

उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की दसवीं परीक्षा विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान व अंग्रेजी सहित उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, बाल ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री व पण्डित प्रवीणजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है। सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

आगामी सत्र 20 जून,09 से प्रारंभ होगा। स्थान अत्यंत सीमित है, अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही निम्नांकित पते से प्रवेशफार्म मंगाकर अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें **कोलारस (मध्यप्रदेश) में 13 मई से 29 मई, 2009 तक** होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें प्रारंभ से अन्त तक रहना अनिवार्य होगा।

यदि दसवीं का परीक्षाफल अभी उपलब्ध न हुआ हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं। दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

- पण्डित रतनचन्द भारिल्ल -

प्राचार्य, श्री टोडरमल दि.जैन सि.महाविद्यालय, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15, फोन : 0141-2705581

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 27 308 अंक : 8

ऐसे विमल भाव...

ऐसे विमल भाव जब पावै।
हमरो नरभव सुफल कहावै।। टेक।।

दरशबोधमय निज आतम लखि, पर द्रव्यनि को नहिं अपनावै।
मोह-राग-रुष अहित जान तजि, झटित दूर तिनको छिटकावै।।
ऐसे विमल भाव जब पावै ।।1।।

कर्म शुभाशुभ बंध उदय में, हर्ष विषाद चित्त नहिं ल्यावै।
निज हित हेत विराग ज्ञान लखि, तिनसौं अधिक प्रीति उपजावै।।
ऐसे विमल भाव जब पावै ।।2।।

विषय चाह तजि आत्मवीर्य सजि, दुखदायक विधिबन्ध खिरावै।
भागचन्द शिवसुख सब सुखमय, आकुलता बिन लखि चित पावै।।
ऐसे विमल भाव जब पावै ।।3।।

– कविवर पण्डित भागचंदजी

* * *

नियमसार प्रवचन

भव्यसमूह निज तत्त्व में प्रवेश करे

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 30 वीं गाथा की टीका में समागत 46 वें कलश पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। कलश मूलत: इसप्रकार है –

इह गमननिमित्तं यत्स्थिते: कारणं वा
यदपरमखिलानां स्थानदानप्रवीणम्।
तदखिलमवलोक्य द्रव्यरूपेण सम्यक्
प्रविशतु निजतत्त्वं सर्वदा भव्यलोक: ।।46।।

जो द्रव्य गमन का कारण है, जो द्रव्य स्थिति का हेतु है और जो द्रव्य सर्व को स्थान देने में प्रवीण है; उन सबको सम्यक् द्रव्यरूप से अवलोककर भव्य समूह सर्वदा निजतत्त्व में प्रवेश करे।

देखो ! धर्मास्तिकाय गमन का निमित्त है तथा अधर्मास्तिकाय स्थिति का निमित्त है। आकाश स्थान देने में प्रवीण है – ऐसा कहा है।

अहा....! ये सभी भगवान के द्वारा देखे हुये जगत के अनादि-अनन्त स्वतंत्र पदार्थ हैं; अत: इनको यथार्थरूप से स्वतंत्र द्रव्य समझना चाहिये अर्थात् एक-दूसरे के साथ उनका सम्बन्ध नहीं है। अथवा एक द्रव्य दूसरे द्रव्य के कारण नहीं है – ऐसा समझना चाहिये।

हे भव्यों ! त्रिकाल ज्ञान और आनन्द स्वरूप भगवान आत्मा में प्रवेश करो, उसमें लीन होओ।

प्रश्न : क्या सभी भव्यजीवों को ऐसा उपदेश है ?

उत्तर : हाँ, यहाँ भव्यसमूह कहा है न। भव्यसमूह अर्थात् जो लायक जीव हैं, वे सदा निज तत्त्व में प्रवेश करें, यही करने योग्य है, अन्य सब तो व्यर्थ है।

प्रश्न : अभव्य के लिये उपदेश नहीं है क्या?

उत्तर : अभव्य की बात ही कहाँ है। यह उपदेश तो भव्यसमूह के लिये है। अभव्य के लिये तो प्रथमानुयोग का उपदेश या मन्दकषाय का उपदेश है। करने योग्य कार्य तो यही है। भगवान आत्मा जो कि ज्ञानानन्द स्वरूप है, उसमें प्रवेश करना है और राग का अवलम्बन तजना है। यहाँ भी यही बात आई है कि हे भव्यसमूह राग का अवलम्बन तजो।

भाषा भी कैसी है कि सर्वदा..... एक तो समस्त भव्यजीवों का समूह और फिर सर्वदा अर्थात् हमेशा ही। पहले दूसरा काम करना और फिर यह करना - ऐसा नहीं कहा है। अपितु सर्वदा-सर्वकाल में यही करना है।

अहा ! भगवान आत्मा ध्रुवज्ञायकस्वभावी है, उसमें गहराई से प्रवेश कर वहाँ दृष्टि ला - ऐसा कहते हैं।

प्रश्न : शास्त्र में आता है कि श्रोता को देखकर उपदेश करना चाहिये?

उत्तर : पण्डित टोडरमलजी ने मोक्षमार्गप्रकाशक में कहा है कि मिथ्यात्व का त्याग और स्वभाव में स्थिरता करना; क्योंकि भाई ! मोक्षमार्ग वहीं है, अन्य क्रियाकाण्ड में मोक्षमार्ग है ही नहीं; अन्य सब तो जानने मात्र के लिये है।

अतः तू प्रयोजनभूत बात की तरफ देख, अन्य से तुझे क्या काम है।

इसप्रकार ३० वीं गाथा का कलश पूर्ण हुआ।

अब आगामी गाथा में कालद्रव्य की बात करते हैं। इस जगत में भगवान ने छह द्रव्य बताये हैं, उसमें से एक द्रव्य भी कम माने तो वह मिथ्यात्वी है। छहों द्रव्य द्रव्य-गुण-पर्याय स्वभावी है। उनकी प्रतीति शास्त्रज्ञान और अनुमानज्ञान से होती है।

यहाँ कोई कहे कि धर्मादि छह द्रव्य तो गणित के विषय हैं; अतः उन्हें समझने की जरूरत नहीं है - ऐसा माननेवाला झूठा है। ये छह पदार्थ ज्ञान के ज्ञेय हैं। जितने प्रमाण में ज्ञेय हैं, उतने प्रमाण में ज्ञान है। यदि इसरूप ज्ञान न जाने अथवा प्रतीति नहीं करे तो उसे तत्त्व की सच्ची प्रतीति नहीं है।

काल द्रव्य औपचारिक नहीं है, काल द्रव्य अनन्त नहीं है; किन्तु असंख्य कालाणुओं की सत्ता है, वही कहते हैं। **(क्रमशः)**

छहढाला प्रवचन

अजीव और आस्रव के बारे में भूल

तन उपजत अपनी उपज जान, तन नशत आपको नाश मान।
रागादि प्रगट ये दुःखदैन, तिनही को सेवत गिनत चैन।।५।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

इस छन्द में जीव की दो भूलें दिखायी हैं - एक तो देह में आत्मबुद्धि और दूसरी राग में आत्मबुद्धि। वास्तव में चैतन्यस्वरूप आत्मा नित्य है, उसका न जन्म है, न मरण - ऐसा अपने को न पहचानकर अज्ञानी जीव शरीर की उत्पत्ति में अपनी उत्पत्ति और शरीर के नाश में अपना नाश मानकर अपने को देहरूप ही पहचानता है।

शरीर के साथ ही वह राग को भी अपना स्वरूप मानता है। आत्मा का स्वभाव तो शांत-निराकुल, ज्ञानस्वरूप है और रागादि भाव प्रगटरूप से दुःखदायक हैं, आकुलतारूप हैं फिर भी जीव उनको सुखरूप मानकर उनका सेवन करता है। इसप्रकार अज्ञानी जीव अपने को अजीव तथा आस्रवों से भिन्न नहीं पहचानता -यह उसकी बहुत बड़ी भूल है।

जिसने आत्मा को देहरूप माना उसने अपने को अजीव माना। शरीर और आत्मा को एक-दूसरे में मिलानेरूप जीव-अजीव तत्त्व संबंधी भूल जीव अनादि से कर रहा है; जीव और अजीव दोनों अत्यन्त भिन्न होने पर भी वह उनको भिन्न नहीं जानता। देह तो संयोगी वस्तु है, उसका वियोग अवश्य होगा। हे जीव ! इस देह का संयोग होने के पहले भी तेरा अस्तित्व था और देह के वियोग के बाद भी तेरा अस्तित्व रहेगा; ऐसे तेरे त्रिकाली अस्तित्व का विचार करे तो क्षणिक देह में तुझे आत्मबुद्धि नहीं रहेगी। जन्म-मरण तो देह के संयोग-वियोग की अपेक्षा से हैं, जीव स्वयं अपने उपयोगस्वरूप से नित्य टिकनेवाला है, उसका न जन्म है, न मरण। तुम नित्य और देह क्षणभंगुर, तुम चेतनसत्ता और देह जड़ - इन दोनों में एकता कैसी? दोनों अत्यन्त भिन्न हैं, दोनों के बीच में 'अत्यन्त अभाव' रूपी बड़ा पहाड़ खड़ा है।

जीव और शरीर अत्यन्त जुदे हैं। यह प्रत्यक्ष भी देखने में आता है कि वे भिन्न हो रहे हैं - तभी तो जीव के चले जाने पर देह को जला देते हैं। ऐसी भिन्नता होने पर भी जीव अपने को देह से भिन्न नहीं पहचानता।

मोक्षमार्गप्रकाशक में पण्डित टोडरमलजी कहते हैं कि जीव मिथ्यात्व के कारण अन्यथा प्रतीतिरूप अतत्त्वश्रद्धान करता है; वस्तुस्थिति जैसी है, वैसी नहीं मानता। अमूर्तिक प्रदेशों का पुंज, प्रसिद्ध ज्ञानादि गुणों का धारक, अनादिनिधन आत्मा आप स्वयं है; तथा मूर्तिक पुद्गलद्रव्यों का पिण्ड, प्रसिद्ध ज्ञानादिगुणों से रहित, नवीन ही जिसका संयोग हुआ है - ऐसे शरीरादि पुद्गल हैं, वे अपने से अन्य हैं।

इन दोनों (आत्मा और शरीर) के संयोगरूप अनेक प्रकार की मनुष्य-तिर्यंचादि पर्यायें होती हैं, उन पर्यायों में मूढ़ जीव अहंबुद्धि धारण कर रहा है, उनमें स्व-पर का भेद नहीं जानता। जो पर्याय प्राप्त हुई, उसी रूप अपने को मान लेता है, भेदज्ञान नहीं करता। उस पर्याय में जो ज्ञानादिक गुण हैं, वह तो अपना स्वभाव है, जो रागादिक भाव है, वह उपाधिरूप परभाव है और जो वर्णादिक है, वह अपना भाव नहीं; किन्तु पुद्गल का गुण है - ऐसा पृथक्करण न करके यह जीव उनमें स्वभाव-परभाव का विवेक नहीं करता, इसलिये इसे अनादि से मिथ्यात्वभाव चल रहा है। जीवादि पदार्थों का जैसा स्वरूप है, वैसा ही पहचानकर श्रद्धान करे, तभी इसका मिथ्याभाव छूटे व दुःख मिटे।

जैसे कोई जीव मोहमुग्ध होकर मुर्दे को जीवंत समझ ले या उसको जिलाना चाहे तो इससे वह स्वयं ही दुःखी होगा। मुर्दा जीवित नहीं होगा और उसका दुःख भी नहीं मिटेगा; किन्तु उस मृतक को मृतक ही जानना और उसको जिलाया नहीं जा सकता - ऐसा समझना ही दुःख दूर होने का उपाय है।

जो जीव मिथ्यादृष्टि होकर पदार्थों को अन्यथा मानकर अन्यथा परिणमन कराना चाहता है, वह स्वयं दुःखी ही होगा; किन्तु पदार्थ को यथार्थ जानकर वे परपदार्थ मेरे परिणमाने से अन्यरूप परिणमनेवाले नहीं हैं - ऐसा मानना ही दुःख दूर होने का उपाय है। भ्रमणा के द्वारा उत्पन्न हुआ दुःख भ्रमणा के मेटने से ही दूर होता है। इसप्रकार सम्यक् श्रद्धा-ज्ञान ही दुःख मेटने का सच्चा उपाय है।

जीव-अजीव की सम्यक् श्रद्धा व उनका भेदज्ञान होने पर शरीर में अहंबुद्धि मिट जाती है और अपने अनादि-अनन्त चैतन्यद्रव्य में ही अहंबुद्धि होती है; अतः उसको मृत्यु का भय नहीं रहता और ऐसे सम्यग्दर्शन-ज्ञानपूर्वक वीतरागभाव प्रगट करने से सिद्धपद प्रगट होकर जन्म-मरणादि सर्व दुःखों का अभाव हो जाता है।

अज्ञानी को देह ही दिखती है, वह कहता है 'मैं देह ही हूँ' - ऐसी बुद्धि होने से उसे ऐसा लगता है कि भोजन के बिना मैं जी नहीं सकता; परन्तु अरे भाई ! तुम तो आत्मा हो, शरीर नहीं हो। यह तो बालपोथी के पहले ही पाठ में सिखाया है कि 'मैं जीव हूँ, शरीर अजीव है, जीव और शरीर भिन्न है।' चेतना जिसका जीवन है - ऐसा आत्मा अनाज के बिना ही जी रहा है। आत्मा यदि अनाज खाये तो मर जाय; क्योंकि जड़ अनाज का यदि आत्मा में प्रवेश हो जाये तो चेतनरूप से उसका अस्तित्व ही न रहे, अनाजरूप होने से वह जड़ हो जाय; माने मर जाये। जड़ अनाज के बिना ही उससे भिन्न अपने चेतन अस्तित्व में आत्मा जीवित है।

देखो तो सही ! दृष्टि-दृष्टि में कितना बड़ा अन्तर है। अज्ञानी तो कहते हैं कि खाना खाने के बिना आत्मा नहीं जी सकता और ज्ञानी कहते हैं कि आत्मा खाना खाये तो मर जाये। भाई ! तुम तो चेतन हो, तुम्हारी चेतना से ही तुम जी रहे हो; तुम्हें तुम्हारा चैतन्य जीवन जीने के लिये जड़ अन्न-पान की अपेक्षा नहीं है। तुझमें जब यह शरीर भी नहीं है, तब आहार कैसे हो सकता है ? अमूर्त आत्मा में मूर्त पदार्थ का प्रवेश नहीं हो सकता।

आत्मा ज्ञानानन्दस्वरूप है, वह त्रिकाल है, असंयोगी है; तो भी अज्ञानी देहबुद्धि होने के कारण शरीर के संयोग-वियोग से आत्मा की उत्पत्ति और विनाश होना मानते हैं। शरीर छूटते समय मानों अपना ही नाश हो रहा हो - ऐसा उन्हें लगता है। हे भाई ! देह की गुफा के अन्दर देह से भिन्न आत्मा है, उसको अपने अनुभव में लो, तब तुमको अपनी नित्यता दिखाई देगी, आत्मा का अमरपना तुमको दिखेगा और मृत्यु का भय भी मिट जायेगा; क्योंकि मरण आत्मा को है ही नहीं। मरण का जाननेवाला स्वयं कभी नहीं मरता। देह आई और देह गयी - इन दोनों अवस्थाओं को जीव ने जाना; परन्तु जानने वाला न तो नया आया है और न अपने से बाहर गया है;

जाननेवाला तो सदैव अपने स्वरूप में ही रहता है। वह स्वयं देहरूप नहीं होता।

अज्ञानी कहता है कि हमें देह से भिन्न आत्मा नहीं दिखता –

नहीं नेत्रों से दीखता, नहीं दीखता रूप।
और कोई अनुभव नहीं, कैसा जीवस्वरूप?(४५)
यातें देह ही आतमा, अथवा इन्द्रिय-प्राण।
कैसे जुदा मानना भासे न भिन्न निशान।(४६)

ऐसी अज्ञानी की आशंका होने पर श्रीगुरु उनको समझाते हैं कि हे भाई ! तुझे देहबुद्धि के कारण ऐसा लगता है, वास्तव में तो आत्मा देह से अत्यन्त भिन्न ही है –

भासे देहाध्यास से आतम देहस्वरूप।
पर वे दोनों भिन्न है अपने-अपने रूप। (४७)
घट-पट आदि जान तू यातें उसको मान।
पर जाननहारा जो स्वयं उसको क्यों नहीं मान? (४८)
जड़ चेतन का सर्वथा भिन्न भिन्न स्वभाव।
एक नहीं होते कभी, तीनों काल द्रय-भाव। (४९)

(श्रीमद् राजचन्द्रजी)

– ऐसे सर्व प्रकार से देह और आत्मा भिन्न हैं, उन दोनों की एकता कभी नहीं होती। लक्षणभेद, युक्ति, आगम आदि अनेक प्रकार से आत्मा और देह की भिन्नता ज्ञानियों ने स्पष्ट समझाई है। अब किसको भेदज्ञान नहीं होगा, जड़ देह को आत्मा कौन मानेगा ?

भाई ! देह तुम नहीं हो; देह तो तुमसे विपरीत तत्त्व है। तुम जीव और देह अजीव; तुम चेतन और वह जड़; तुम शाश्वत और देह क्षणभंगुर; तुम अरूपी-इन्द्रियातीत और देह तो रूपी-इन्द्रियगम्य; – ऐसी स्पष्ट भिन्नता है। ज्ञानी अपने को देह से अत्यन्त भिन्न अनुभवते हैं। आत्मा को आत्मा का वियोग कभी नहीं होता; देह का वियोग होता है; क्योंकि वह तो अभी भी जुदा ही है। जैसे सिद्ध भगवंत सदैव शरीर के बिना ही चैतन्यप्राण से जी रहे हैं, वैसे ही सब जीव शरीर के बिना अपने चैतन्यभाव से ही जी रहे हैं। जो चेतना से जीवे उसी का नाम जीव है। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : ज्ञानी जीव भी भगवान के समक्ष भक्ति करते समय बोलते हैं कि हे नाथ ! भव-भव में आपका शरण प्राप्त हो। यदि भगवान का शरण न होता तो ज्ञानी जीव ऐसा कैसे बोलते ?

उत्तर : भव-भव में भगवान का शरण प्राप्त हो - यह मात्र निमित्त के तरफ की भाषा है, ज्ञानी इस भाषा का कर्त्ता नहीं है। इस भाषा के समय ज्ञानी के अन्तर में ऐसा अभिप्राय होता है कि रागरहित चिदानन्द मेरा स्वरूप है। ऐसी श्रद्धा-ज्ञान के होने पर भी अभी पर्याय में राग है; अत: जबतक यह राग समाप्त न हो, तबतक अशुभराग तो हमें होवे ही नहीं और वीतरागता के निमित्त के प्रति ही लक्ष हो, वीतरागता का ही बहुमान हो, शुभराग टूटकर अशुभराग तो आवे ही नहीं। अब शुभराग लम्बे समय तक तो टिक नहीं सकता, अल्पकाल में ही वह पलटकर या तो वीतरागभावरूप हो जायेगा या अशुभभावरूप हो जायेगा।

वीतराग का ही शरण हो - इसमें ज्ञानी की ऐसी भावना है कि यह शुभ टूटकर अशुभ न हो, अपितु अशुभ टूटकर वीतरागता ही हो। वीतराग के बहुमान का राग हुआ, उस समय भी लक्ष तो वीतराग की तरफ होता है; परन्तु वीतराग भगवान मुक्ति के दाता नहीं हैं, मैं अपनी शक्ति से ही राग तोड़कर भगवान बनूँगा। यदि आत्मा में ही भगवान बनने की शक्ति न हो तो भगवान कुछ भी देने में समर्थ नहीं है और यदि आत्मा में ही भगवान बनने की शक्ति है, तो भगवान की अपेक्षा ही क्या ?

वीतराग भगवान की प्रार्थना के शुभराग से तीनकाल-तीनलोक में धर्म नहीं होता। जिसे अपने स्वत: शुद्धस्वभाव का भान नहीं; वह अपने लिये देव-शास्त्र-गुरु का सहारा चाहता है और ऐसी मान्यतावाले को आचार्यदेव जीव कहते ही नहीं, वह तो जड़ जैसा है - मूढ़ है, उसे चैतन्यतत्त्व का भान नहीं है। जैसे शरीर में फोड़ा निकला हो; उसे जो रोगरूप समझे, उसका ही ऑपरेशन होगा। उसीप्रकार जो जीव शुद्धचैतन्यस्वरूप को जाने तथा हिंसादि और दयादि के अशुभभावों से स्वरूप को भिन्न जाने, वही जीव विकारी भावों का अभाव करने पर प्रयत्न करके मुक्ति प्राप्त करेगा। जो अपने निरुपाधि शुद्धस्वरूप को पहचानेगा ही नहीं, वह जीव शुभाशुभभावों को

छोड़ेगा नहीं और उसकी मुक्ति भी नहीं होगी।

प्रश्न : भेदभक्ति और अभेदभक्ति अथवा व्यवहारभक्ति और निश्चयभक्ति का स्वरूप क्या है एवं उसका क्या फल है ?

उत्तर : परमात्मा के स्वरूप का विचार करना भेदभक्ति है, वह प्रथम होती है। ऐसी भेदभक्ति को जानने के पश्चात् ऐसा ही परमात्मा मैं हूँ, आत्मा में ही परमात्मा होने की शक्ति है - इसप्रकार अपने आत्मा को पहिचानकर उसमें स्थिर होना परमार्थभक्ति अथवा अभेदभक्ति अथवा निश्चयभक्ति है। अभेद आत्मा की तरफ बढ़ने के लक्षपूर्वक जो भेदभक्ति होती है, वह व्यवहार कहलाती है। रागरहित ज्ञानस्वरूपी आत्मा का श्रद्धान-ज्ञान करके उसके ध्यान में एकाग्रतारूप अभेदभक्ति तो मोक्षफल दायक है, इसके विपरीत भेदभक्ति बंधफलदायक है।

प्रश्न : अभेदभक्ति कितने प्रकार की होती है। क्या सभी प्रकार की भक्ति स्त्रियों को हो सकती है ?

उत्तर : अभेदभक्ति दो प्रकार की होती है - (1) शुक्लध्यान (2) धर्मध्यान। यद्यपि कहने में तो दोनों जुदा (भिन्न) लगते हैं; परन्तु इन दोनों के अवलम्बनस्वरूप आत्मा एक ही है, इसलिये ये दोनों एक ही जाति के हैं, मात्र निर्मलता की अधिकता और हीनता का ही अन्तर है। आत्मस्वभाव के भान द्वारा धर्मध्यान स्त्रियों को भी हो सकता है; परन्तु उन्हें शुक्लध्यान नहीं हो सकता; क्योंकि धर्मध्यान की अपेक्षा शुक्लध्यान विशेष निर्मल है और ऐसी विशेष निर्मलता स्त्रीपर्याय में स्वाभाविकरूप से सम्भव नहीं है।

प्रश्न : कोई किसी का बहुमान नहीं कर सकता - ऐसा मानने में तो तीर्थंकर का अविनय हो जावेगा ?

उत्तर : तीर्थंकर का अविनय किसे कहते हैं ? तीर्थंकर भगवान तो वीतराग हैं। वास्तव में तो राग से उनका विनय नहीं होता। जैसा तीर्थंकर प्रभु ने स्वयं किया और कहा, वैसा ही समझना और भगवान चैतन्य ज्योति का बहुमान करके उसमें ठहरना - यही तीर्थंकर का सच्चा विनय है। सत् समझने से विनय का अभाव नहीं होता, अपितु सत् की सच्ची भक्ति और सच्चा विनय होता है।

पहले अज्ञानदशा में कुदेवादि के समक्ष मस्तक झुकाता रहा। अब सच्ची समझ होने पर जबतक स्वयं वीतराग नहीं हो जाता, तबतक बीच में सत् निमित्तों का विनय, भक्ति, बहुमान आये बिना नहीं रहता; परन्तु वहाँ भी परमार्थ से पर का बहुमान नहीं, अपने भाव का ही बहुमान है। ज्ञानी तो अपने स्वभाव को ही सर्वोत्कृष्ट जानकर उसी का आदर करते हैं; क्योंकि स्वभाव के आदर में ही तीर्थंकर का सच्चा विनय समाहित है।

समाचार दर्शन -

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

सोनागिर (मप्र.) : यहाँ कुन्दकुन्द नगर प्रांगण में श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट द्वारा श्री 1008 महावीर दि.जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन शनिवार, दिनांक 7 फरवरी से शुक्रवार, 13 फरवरी, 09 तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर नवनिर्मित महावीरस्वामी मानस्तंभ, श्री सीमंधर समवशरण जिनमंदिर के अतिरिक्त श्री कुन्दकुन्द कहान आगम मंदिर में विद्यमान बीस तीर्थंकर भगवंतों, भविष्य कालीन चौबीस तीर्थंकर भगवंतों की वीतराग भाववाही जिन प्रतिमायें विराजमान की गयी।

महोत्सव में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के प्रतिदिन **'समयसार की ३८ वी गाथा'** पर हुये मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। आपके अतिरिक्त डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, पण्डित हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, पण्डित प्रकाशचंदजी मैनपुरी, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना, पण्डित अशोकजी लुहाडिया अलीगढ, पण्डित अनिलजी भिण्ड एवं स्थानीय विद्वान पण्डित मांगीलालजी कोलारस आदि का समागम प्राप्त हुआ।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के कुशल निर्देशक वाणीभूषण पण्डित श्री ज्ञानचंदजी विदिशा थे। प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री दिल्ली ने पण्डित मधुकरजी जलगाँव, पण्डित लालजीरामजी विदिशा, पण्डित सुनीलकुमारजी भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, ब्र. नन्हेलालजी सागर, पण्डित सुकुमालजी झाँझरी आदि के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न कराई।

सभी कार्यक्रमों का कुशल संचालन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने किया।

महोत्सव में बालक वर्द्धमान के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती सुषमा जैन तथा डॉ. श्री आर.के. जैन विदिशा को मिला। सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री पदमजी पहाडिया व श्रीमती रानी पहाड़िया इन्दौर थे। कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री दीपक-अनिलकुमार सेठी व श्रीमती विनिता सेठी बैंगलोर थे।

प्रतिष्ठा महोत्सव में पूरे देश से हजारों मुमुक्षु भाई-बहिनों ने पधारकर धर्मलाभ लिया। इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से ९६ हजार ५२५ रुपये का सत्साहित्य एवं १२ हजार ४७० घण्टों के डी.वी.डी. एवं सी.डी कैसिट्स घर-घर पहुँचे।

विद्वत्सम्मान ह्न सोनागिर पंचकल्याणक महामहोत्सव के मध्य तपकल्याणक के अवसर पर दिनांक 11 फरवरी 2009 को डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा विद्वानों के सम्मान के क्रम में जैनदर्शन के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में किये गये विशिष्ट कार्यों के लिये **डॉ. मुकेश जैन शास्त्री 'तन्मय' विदिशा** का सम्मान किया गया।

इस प्रसंग पर पण्डित डॉ. विद्यानंदजी जैन विदिशा ने सम्मानमूर्ति का परिचय दिया, तदुपरान्त आपको प्रशस्ति, शॉल, श्रीफल एवं नगद राशि से पुरस्कृत किया गया।

श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित मुख्य प्रवचन हॉल का –

नवीनीकरण शिलान्यास सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित मुख्य प्रवचन हॉल के नवीनीकरण का शिलान्यास श्री जमनालालजी प्रकाशचन्दजी सेठी परिवार जयपुर के करकमलों से माघ शुक्ल त्रयोदशी शनिवार, दिनांक 7 फरवरी को किया गया।

इस अवसर पर आयोजित शिलान्यास सभा की अध्यक्षता पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका ने की। मुख्यअतिथि श्री जमनालालजी प्रकाशचन्दजी सेठी-लालकोठी जयपुर थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील एवं श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मंचासीन थे।

इस प्रसंग पर युवा फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने हॉल के निर्माणकर्त्ता स्व. सेठ श्री पूरणचन्दजी गोदिका का स्मरण किया। वर्तमान में इस विशाल प्रवचन हॉल के नवीनीकरण की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुये इस कार्य हेतु सम्पूर्ण द्रव्य प्रदान करनेवाले शिलान्यासकर्त्ता परिवार का आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर श्री प्रकाशचन्दजी सेठी ने कहा कि जिसप्रकार वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति अपने घर को आधुनिकतम बनाना चाहता है, उसीप्रकार हमारे जिनायतन और स्वाध्याय हॉल भी आधुनिकतम और स्वाध्याय की गतिविधियों हेतु सर्वानुकूलता से युक्त होना चाहिये।

आपकी माताजी श्रीमती सूरजदेवी सेठी ने अपने पुत्र के माध्यम से किये जा रहे ऐसे पुनीत कार्य के लिये अत्यन्त हर्ष व्यक्त किया।

पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने शिलान्यास प्रशस्ति का वाचन किया। तदुपरान्त शिलान्यासकर्त्ता परिवार को कन्नी-कटोरा, शिलापट्ट एवं प्रशस्ति भेंट की गई।

अन्त में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का मार्मिक उद्बोधन हुआ।

प्रवचन हॉल के नवीनीकरण का सम्पूर्ण कार्य आर्किटेक्ट श्री विकास जैन एवं श्री अजितजी बंसल की देखरेख में किया जायेगा। इस कार्य हेतु इन दोनों महानुभावों ने अपनी नि:शुल्क सेवायें प्रदान करने की घोषणा की।

इसी अवसर पर श्री अजितजी बंसल ने अपने दादा स्व.पण्डित श्री चुन्नीलालजी चन्देरी की स्मृति में श्री सीमंधर जिनालय के नवीनीकरण का कार्य हॉल के नवीनीकरण के पश्चात् करवाने की स्वीकृति प्रदान की। सभा का संचालन पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री ने किया।

सभा के उपरान्त शिलान्यास की विधि के अन्तर्गत सर्वप्रथम शिलान्यासकर्त्ता परिवार एवं उपस्थित जन समुदाय द्वारा पंचपरमेष्ठी पूजन की गई। तदुपरान्त शिलान्यास स्थल पर स्वर्ण-रजत ईंटों एवं शिलापट्ट के माध्यम से शिलान्यास किया गया। विधि-विधान के कार्य पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री ने श्री टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों के सहयोग से सम्पन्न कराये।

स्वर्ण जयन्ती समारोह

मुम्बई : यहाँ मुम्बादेवी रोड स्थित श्री सीमंधर जिनालय का स्वर्ण जयन्ती समारोह दिनांक 30 जनवरी से 1 फरवरी, 09 तक हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया।

इस प्रसंग पर ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर के '**ध्यान का स्वरूप**' विषय पर दो दिन मार्मिक व्याख्यान हुये। साथ ही डॉ.उत्तमचंद जी जैन सिवनी, पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली एवं पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड का सान्निध्य भी मिला।

इसी अवसर पर डॉ. भारिल्ल की नवीनतम कृति '**ध्यान का स्वरूप**' नामक पुस्तक की 1000 प्रतियाँ वितरित की गई।

ब्र.यशपालजी द्वारा धर्म प्रभावना...

ध्रुवधाम (बाँसवाड़ा) : यहाँ श्री आचार्य अकलंक न्याय विद्यालय, ध्रुवधाम में दिनांक 13 जनवरी 24 जनवरी तक प्रतिदिन ब्र. यशपालजी द्वारा प्रात: समयसार की ज्ञायकभाव प्रबोधिनी टीका व गुरुदेवश्री के प्रवचनों के आधार से 47 शक्तियों पर विशेष प्रवचन हुये साथ ही दोपहर में गुणस्थान विवेचन के आधार से कर्म की 10 अवस्थाओं पर कक्षा तथा रात्रि में गुणस्थानों पर विशेष विवेचन प्रस्तुत किया गया।

विचार गोष्ठी सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ सिद्धार्थनगर जैन मंदिर में दिनांक 1 फरवरी को राजस्थान जैन साहित्य परिषद द्वारा आयोजित विचार-गोष्ठियों के क्रम में आचार्य कुन्दकुन्द देव की जन्म जयन्ती के उपलक्ष में विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील का 'जैन अध्यात्म के प्रचार-प्रसार में आचार्य कुन्दकुन्द का योगदान' विषय पर मार्मिक व्याख्यान हुआ। साथ ही डॉ. प्रेमचन्दजी रांवका ने भी सभा को संबोधित किया। सभा की अध्यक्षता परिषद के अध्यक्ष श्री नवीनकुमारजी बज ने की। आभार प्रदर्शन परिषद के मंत्री श्री महेशजी चांदवाड ने किया। गोष्ठी के संयोजक व संचालक श्री शांतिलालजी गंगवाल थे।

जिला फैडरेशन का शपथ-ग्रहण

बाँसवाड़ा (राज.) :यहाँ दिनाँक 25 जनवरी, 09 को साधर्मी मिलन समारोह के अवसर पर अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की बाँसवाड़ा जिले की कार्यकारिणी का शपथ - ग्रहण समारोह पण्डित विजयकुमारजी बडोदिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर मुख्यअतिथि के रूप में पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर-प्रभारी राज.प्रदेश तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में पण्डित राजकुमारजी जैनदर्शनाचार्य-प्रान्तीय महासचिव, श्री शान्तिलालजी सेठ, श्री धूलजीभाई ज्ञायक, श्री धनपालजी ज्ञायक, श्री बदामीलालजी शाह, श्री प्रकाशजी शाह मंचासीन थे। **- गणतंत्र जैन**

प्रथम वार्षिकोत्सव सानन्द सम्पन्न

बदरवास (म.प्र.) : यहाँ श्री महावीर जिनालय में दिनांक 19 एवं 20 जनवरी 09 को पंचकल्याणक के प्रथम वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंगल कलश शोभायात्रा के पश्चात् जिनमंदिर में ध्वजारोहण से हुआ। इस प्रसंग पर प्रात: पूजन-विधान, दोपहर में वैराग्य पाठ एवं पण्डित मांगीलालजी कोलारस के प्रवचन हुए।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री एवं उनके सहयोगी पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित कान्तिलालजी जैन इन्दौर, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल एवं स्थानीय विद्वान पण्डित राहुलजी शास्त्री ने सम्पन्न कराये। **– अभयकुमार जैन**

भव्य वेदी शिलान्यास महोत्सव

राजकोट (गुज.) : यहाँ दिनांक 9 जनवरी 09 को प्रात: श्री 1008 महावीर जिनालय एवं श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर जिनालय हेतु वेदी शिलान्यास महोत्सव सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर मंगल कलश शोभायात्रा के पश्चात् पारस कम्युनिटी हॉल में श्री जिनेन्द्र अभिषेक, नित्यनियम पूजन एवं श्री सम्मेदशिखर मंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री किशोरभाई लखानी ने की। मुख्यअतिथि श्री मुकुन्दभाई खारा थे। सभा का संचालन पण्डित रजनीभाई दोषी ने किया।

भगवान महावीरस्वामी की वेदी का शिलान्यास श्री वीरेन्द्रभाई खारा के करकमलों से, बीस तीर्थंकर जिनालय वेदी का शिलान्यास समस्त मुमुक्षु संघ द्वारा एवं त्रय शिखर का शिलान्यास ब्रहमचारिणी बहिनों एवं भाईयों द्वारा किया गया।

शिलान्यास की मंगलविधि प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में उनके सहयोगी पण्डित कांतिलालजी इंदौर, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ एवं स्थानीय पण्डित सुनीलजी जैनापुरे ने सम्पन्न कराई। **– वीरेन्द्र भाई खारा**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

22 मार्च से 24 मार्च 2009 तक	जयपुर	राजस्थान वि. वि. में संगोष्ठी
23 अप्रैल से 29 अप्रैल 2009	हस्तिनापुर	पंचकल्याणक
1 से 5 मई 2009 तक	जयपुर	विधान (बड़जात्या परिवार)
13 मई से 29 मई 2009 तक	कोलारस	प्रशिक्षण शिविर
4 जून से 22 जुलाई 2009 तक	यूरोप व अमेरिका	धर्म प्रचारार्थ यात्रा
26 जुलाई से 4 अगस्त 2009 तक	जयपुर	आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

शोक समाचार

1. वल्लभनगर जिला उदयपुर निवासी श्रीमती महताबबाई ध.प. श्री कन्हैयालालजी कमावत (जैन) का दिनांक 18 दिसम्बर, 08 को समताभाव पूर्वक समाधिमरण हुआ। आप धार्मिक, स्वाध्यायी एवं आत्मार्थी महिला थीं। आपकी स्मृति में 50,000/- रुपये ध्रुवफण्ड हेतु प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

2. बीना (म.प्र.) निवासी पं. गुलाबचन्दजी जैन की मातेश्वरी **श्रीमती छोटीबाईजी** का 85 वर्ष की आयु में शांतपरिणामों पूर्वक पंचनमस्कार मंत्र सुनते-सुनते का देहावसान हो गया। उनकी पुण्यस्मृति में वीतराग-विज्ञान को 501/-रुपये प्राप्त हुये हैं।

3. इन्दौर निवासी श्रीमती चन्दाबाई ध.प. श्री धर्मचन्दजी गंगवाल का दिनाँक 23 जनवरी, 09 को 75 वर्ष की आयु में समाधिपूर्वक देहविलय हो गया है। आप पं. श्री इन्द्रजीतजी गंगवाल की माताजी थीं। आप धार्मिक एवं आत्मार्थी महिला थीं, आपके परिवार में भी निरन्तर धार्मिक माहौल रहता है। आपकी स्मृति में कुल 1000/- रूपये प्राप्त हुये हैं।

4. मौ-भिण्ड निवासी श्रीमती कन्ठादेवी जैन ध.प.स्व.श्री गुलाबचन्द जी जैन का दिनाँक 11 जनवरी को देहावसान हो गया। आप धार्मिक एवं स्वाध्यायी महिला थीं। आपकी स्मृति में 500/- रूपये प्राप्त हुये।

5. दिल्ली निवासी श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन का दिनांक 21 जनवरी, 09 को प्रात: 4 बजे 78 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपका पूरा परिवार प्रारम्भ से ही गुरुदेव के सम्पर्क में रहा। आप सोनगढ़ एवं टोडरमल स्मारक में लगनेवाले शिविर में उपस्थित रहते थे। अशोकनगर (दिल्ली) पंचकल्याणक में आपको बाल तीर्थंकर के पिता बनने का सौभाग्य मिला था।

6. शाहपुरा (जबलपुर) निवासी श्री ज्ञानचन्दजी जैन का 21 जनवरी, 09 को 82 वर्ष की आयु में रोड एक्सीडेंट में देहावसान हो गया है। आप सरल स्वभावी एवं धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे। आप श्री टोडरमल महाविद्यालय जयपुर के स्नातक श्री पवनजी शास्त्री किशनगढ के पिता एवं श्री प्रवेशजी शास्त्री करेली के नानाजी थे।

7. सूरत निवासी श्रीमती कमलादेवी बड़जात्या ध.प. श्री नेमीचन्दजी बड़जात्या का दिनांक 8 जनवरी, 09 को समताभाव पूर्वक समाधिमरण हुआ। आप धार्मिक, स्वाध्यायी एवं आत्मार्थी महिला थीं। आपकी स्मृति में 201/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही सद्गति को प्राप्त हों - ऐसी मंगल भावना है।

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रात: 6.40 से 7.00 बजे तक

फैडरेशन कोटा संभाग द्वारा

स्नेह मिलन एवं गोष्ठी सम्पन्न

कोटा : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट गिरधरपुरा में दिनांक 25 जनवरी को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन कोटा संभाग के तत्त्वावधान में स्नेह मिलन समारोह तथा 'स्वाध्याय एवं तत्त्वप्रचार' पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

समारोह में श्रीमान् सुखमालजी जैन (चौधरी) भीलवाड़ा परिवार द्वारा झण्डारोहण किया गया। इस अवसर पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर का मार्मिक व्याख्यान हुआ।

प्रवचनोपरान्त श्री उत्तमचंदजी भारिल्ल अजमेर (प्रांतीय अध्यक्ष जैन युवा फैडरेशन) की अध्यक्षता में गोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. नीलेश जैन थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री प्रेमचन्दजी बजाज मंचासीन थे।

गोष्ठी में पण्डित धर्मचंदजी जैथल, पण्डित संजयजी शास्त्री भैंसरोड़गढ़, पण्डित जयकुमारजी जैन बाँरा, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा एवं श्री ज्ञानचंदजी कोटा ने अपने विचार व्यक्त किये।

मुख्य अतिथि डॉ. नीलेश जैन ने विद्वानों के उद्बोधन को सुनकर प्रतिदिन स्वाध्याय करने का नियम लिया। अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. उत्तमचन्दजी भारिल्ल ने प्रांत में चलनेवाली गतिविधियों की विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर पण्डित रतनचन्दजी शास्त्री ने मुमुक्षु आश्रम की गतिविधियों का परिचय दिया। संचालन श्री पी.के हरसौरा ने किया।

रत्नत्रय मण्डल विधान सानंद सम्पन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री दिगम्बर जिन चन्द्रप्रभ चैत्यालय (सीमंधर जिनालय) में दिनांक 1 से 5 फरवरी तक रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इसी अवसर पर ध्वजा परिवर्तन तथा भगवान शान्तिनाथ की प्रतिमाजी को विराजमान किया गया।

इसी अवसर पर पण्डित रजनी भाई हिम्मतनगर, डॉ. योगेशजी अलीगंज, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा व पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर के प्रवचनों का लाभ सैकड़ों मुमुक्षओं ने लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य डॉ. महावीरप्रसादजी टोकर के निर्देशन में ध्रुवधाम बांसवाड़ा से पधारे पण्डित सनत शास्त्री व पण्डित सुमित शास्त्री ने सम्पन्न कराये।

प्रतिमा विराजमान

नरोड़ा-अहमदाबाद : यहाँ चैतन्यधाम में प्रतिष्ठित श्री सीमंधरस्वामी की प्रतिमा को दिनाँक 7 जनवरी 09 को श्री जयंतिलालजी के निवास से शोभायात्रा पूर्वक श्री सीमंधर जिनालय लाया गया। जहाँ सर्वप्रथम जिनेन्द्र अभिषेक-पूजन पूर्वक पंचपरमेष्ठी विधान का भव्य आयोजन किया गया, तदुपरान्त मूलनायक सीमंधर भगवान को मंत्रोच्चार पूर्वक विराजमान किया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य ब्र.जतीशचन्दजी शास्त्री, पण्डित कान्तिलालजी इन्दौर एवं पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ ने सम्पन्न कराये। इस अवसर पर पण्डित सोनूजी शास्त्री एवं पण्डित उदयमणिजी शास्त्री के प्रवचनों का विशेष लाभ मिला।

डॉ. भारिल्ल के साहित्य पर शोध...

अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के साहित्य पर अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन राजस्थान प्रदेश के प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्र शास्त्री की धर्मपत्नी श्रीमती सीमा जैन उदयपुर ने **'डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के साहित्य का समालोचनात्मक अनुशीलन'** विषयक शोधकार्य करने के लिये मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय उदयपुर में अपना रजिस्ट्रेशन कराया है, जिसको विश्वविद्यालय ने स्वीकृति प्रदान कर दी है।

उदयपुर निवासी श्री जिनेन्द्र एवं सीमा जैन डॉ. भारिल्ल से इतने अधिक प्रभावित हुये कि उन्होंने उनपर ही शोध करने का निर्णय लिया।

हार्दिक शुभकामनायें !

जयपुर (राज.) : यहाँ दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप राजस्थान रीजन द्वारा वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर दिनांक 1 फरवरी को विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट सेवाओं के लिये पाँच महानुभावों को सम्मानित किया गया।

इस प्रसंग पर धार्मिक-सामाजिक एवं नैतिक चेतना के क्षेत्र में बन्धुत्व की भावना के साथ सेवा के रूप में उल्लेखनीय कार्यों के लिये श्री टोडरमल दि.जैन सि.महाविद्यालय के उप-प्राचार्य **पण्डित शांतिकुमारजी पाटील** को **यशस्वी समाजसेवी** की उपाधि से अलंकृत किया गया।

वीतराग-विज्ञान एवं महाविद्यालय परिवार की ओर से आपको हार्दिक शुभकामनायें !

पुस्तक समीक्षा –

ध्यान का स्वरूप : जैनदर्शन के आलोक में

'ध्यान' आज का बहुचर्चित विषय है। इस विषय पर एक ऐसी पुस्तक की आवश्यकता बहुत समय से अनुभव की जा रही है; जो जिनागम के परिप्रेक्ष्य में इस विषय को आज के संदर्भ में प्रस्तुत कर सके। डॉ. भारिल्ल की प्रस्तुत कृति ने निश्चित रूप से उक्त आवश्यकता की पूर्ति की है। यदि लोग निष्पक्ष भाव से इस कृति का अध्ययन करेंगे तो ध्यान के संदर्भ में उनकी वर्तमान धारणाओं का परिमार्जन अवश्य होगा।

जो विषयवस्तु शताधिक पृष्ठों में प्रस्तुत करना भी एक दुष्कर कार्य था; उस विषयवस्तु को इस लघुकाय कृति में सर्वांग प्रस्तुत कर दिया गया है। इस कृति का स्वाध्याय करने से ध्यान के संदर्भ में वर्तमान में चलनेवाली बहुत सी भ्रांतियों का निराकरण होगा।

आत्मार्थी भाई-बहनों से मेरा अनुरोध है कि इसे एकबार नहीं, अनेकबार आद्योपान्त पढ़ें और अच्छी लगे तो इसे जन-जन तक पहुँचाने में सहयोग करें।

इसकी सौ प्रतियाँ मात्र चार सौ रुपये में उपलब्ध है। इसकी सौ दो सौ प्रतियाँ मंगाकर अपने इष्ट मित्रों, भाई-बहनों और संबंधियों तक अवश्य पहुँचायें। **– पण्डित रतनचंद भारिल्ल**